

Magisterprüfung am 2.9.2003
Sprachen und Kulturen des neuzeitlichen Südasiens
Schriftliche Prüfung

Erster Teil (120 Minuten)

Bitte übersetzen Sie den beigefügten Hindi-Text; Sie dürfen dazu ein hindi-deutsches oder hindi-englisches sowie englisch-deutsches Wörterbuch benutzen.

Vokabeln: क्षेत्रीय = regional; यूरोप = यूरोप; भूमध्य सागर = Mittelmeer; हिंदी महासागर = Indischer Ozean; ऐटलान्टिक = atlantisch; व्यापारिक = wirtschaftlich; से (in यहां जातियों से) = mehr/eher als; से (in उन जनों से) = [verbunden] mit/bezogen auf.

Zweiter Teil (60 Minuten)

Bitte beantworten Sie folgende Fragen:

- 1) Wenn man den ersten Satz des letzten Absatzes (ab हिंदी जाति की तुलना ...) mit den zwei letzten Sätzen des Absatzes davor (ab किस पश्चिमी यूरोप की ...) vergleicht, stellt man fest, daß hier indirekt jemand in ein schlechtes Licht gerückt wird. Wer ist das, und in welchem geschichtlichen Zusammenhang ist dies zu sehen?
- 2) In welchen Bedeutungen wird हिंदी / हिन्दी in diesem Text verwendet (im ersten und im letzten Absatz)? Steckt eine Absicht hinter diesen Verwendungen, und wenn ja, welche? (Beachten Sie auch den Buchtitel und die Kapitelüberschrift!)
- 3) Wie wird im letzten Absatz die हिंदी जाति im Verhältnis zu den anderen indischen जाति-s geschildert? Was soll wohl dadurch erreicht werden?
- 4) Schreiben Sie bitte Ihre Gedanken in Bezug auf eine हिंदी जाति und den heutigen größeren kulturell-politischen Zusammenhang, in den dieser Text zu stellen ist.

Dritter Teil (60 Minuten)

Bitte übersetzen Sie den beigefügten Urdu-Text; Sie dürfen dazu ein urdu-deutsches oder urdu-englisches sowie englisch-deutsches Wörterbuch benutzen.

Vokabeln und Lesehilfen: نقطہ نگاہ; انقلابِ اسلامی = انقلابِ اسلامی = نقطہ نگاہ; نقطہ نگاہ = کردہ = Formung, Vervollkommnung; تخلیق; جو نہایت; نقطہ نگاہ = توجہ; بھی بیچارے; پہ حکومت; لہذا; چاہتا تھا; زمین پہ; کیا گیا = Muhammad Reza Shah Pahlawi; محمد رضا شاہ پہلوی; جس نے; نہ = جذبات; عاقبت-اندیش = Negation von اندیش; جو اپنے = arabischer Plural von جذبہ

Hindi-Text

Der Text wurde dem Werk हिन्दी जाति का साहित्य von रामविलास शर्मा (दिल्ली १९९२) entnommen, und zwar S. 161-162 aus dem Kapitel हिन्दी साहित्य के इतिहास का महत्व.

सोलहवीं सदी के आरंभ में एशिया के देश विकसित और परिष्कृत क्षेत्रीय व्यापार में यूरोप से पीछे नहीं थे। पुनर्जागरण काल में व्यापार के लिए जो महत्व भूमध्य सागर और हिंदी महासागर का था, वह ऐटलान्टिक महासागर का नहीं था।

यूरोप में दो तरह की जातियां थीं। एक वे जिन्होंने प्राचीन काल में उच्चकोटि की सभ्यता का विकास देखा था, फिर सामंतवाद के अंधकार युग में उसका ह्रास भी देखा था। दूसरी वे जिनके यहां ऐसा कोई विकास न हुआ था और जो अब सामंती व्यवस्था से सीधे व्यापारिक पूंजीवाद के युग में प्रवेश कर रही थीं। केवल यूनानी और इटालियन जातियों ने प्राचीन काल में उच्चकोटि की सभ्यता का विकास देखा था, केवल इनके लिए पुनर्जागरण काल की संज्ञा सार्थक हो सकती थी। इनमें यूनानी जाति को तुर्कों ने गुलाम बना रखा था, अभी उसके पुनर्जागरण का प्रश्न ही न था। यूरोप की एक ही जाति के लिए पुनर्जागरण काल की संज्ञा सार्थक थी और यह थी इटालियन जाति। किस पश्चिमी यूरोप की जातियों ने उस संज्ञा को अपने इतिहास से जोड़ लिया। केवल इटालियन जाति रोमन सभ्यता के ह्रास के बाद सामंतवाद के अंधकार युग को मध्यकाल कह सकती थी परंतु पश्चिमी यूरोप की जातियों ने, अपनी किसी प्राचीन सभ्यता का अता-पता न रहने पर भी, अपने सामंती युग को मध्यकाल कहना शुरू कर दिया।

हिंदी जाति की तुलना यूनानी और इटालियन जातियों से की जा सकती है। उनकी तरह संस्कृत वाङ्मय के रूप में इसकी प्राचीन सांस्कृतिक उपलब्धियां सुरक्षित थीं। यूनानी और इटालियन जातियों के साहित्य से भिन्न भारत के प्राचीन संस्कृत साहित्य में हिन्दी जाति के अलावा अन्य जातियों के रचनाकारों का योगदान उल्लेखनीय था। (यहां जातियों से आशय उन जनों से है जिनसे आगे चलकर जातियों का निर्माण हुआ।) अपनी साहित्यिक विरासत के न होने पर भी पश्चिमी यूरोप की जातियों ने यूनानी और इटालियन जातियों के प्राचीन साहित्य को अपनाया। इनमें यूनानी जाति के साहित्य की भूमिका निर्णायक थी। उसने इटालियन जाति के प्राचीन साहित्य को प्रभावित किया था, नये साहित्य को भी प्रभावित किया।

Urdu-Text

Der Text wurde einem Aufsatz von گرور (J.L. Grover) aus انڈیا (India) in بولتن اردو دانشگاه اصفهان (Bulletin of the University of Isfahan) vom فروری ۱۹۸۲, einer Sondernummer zur islamischen Revolution in Iran, entnommen:

ایرانی انقلاب اسلامی میرے نقطہ نگاہ سے
فدا کے نام پہ، و نیابت میر بان اور رحم کرنے والہ ہے
م فدا کی تخلیق کردہ مخلوق، میں اور فدا ہمیں زمین پہ
آزاد اور خوشحال جانتا تھا۔ مگر بد قسمتی سے ایرانی ابتدا
سے ہی شہنشاہیت کے غلام تھے۔ لہذا بیت سے شہنشاہیوں
نے ایران پہ حکومت کی مگر کسی نے بھی بیمارے لوگوں کے
مسائل پہ توجہ نہ دی۔ ان میں سے آفری شہنشاہ جس نے
ایران پہ حکومت کی محمد رضا شاہ پہلوی تھا، جو اپنے باپ
کی طرح، پھو دل، غیر انسانی، عاقبت نا اندیش اور
جذبات سے عاری تھا